सर्वाम्नायमयेन येन वहताऽन्तःपुडरीकेक्षणं
हत्पद्मानि विकासितानि सुपथा व्यक्तीकृता हर्षिताः।
हंसालोचनरोधिनः प्रमथिता वादाः प्रमादावहा
गोभिः कर्म सतां प्रवत्तितमसौ श्री वल्भार्कोऽवतात्।।
श्री भारतमार्त्तण्डमहाभागाः।
निःसाधन समोद्धार करणाय समागताः।
श्री मन्तो वल्लभाचार्याः कृपयन्तु सदामयि।।

प्रति १,००,००० {न्योछावर ४/- रुपया}

❀ निवेदन ❀

पुष्टिमार्गीय विचारों के प्रचारार्थ पूज्यपाद आचार्यवर्य्य गोस्वामितिलकायित श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी {श्री राकेशजी} महाराज की आज्ञा से टिप्पणी के अन्त में श्रीमहाप्रभु जी के उपदेश प्रकाशित किये हैं। आशा है वैष्णव बन्धु इन उपदेशों से लाभ लेकर हमारे प्रयास को सफल बनायेंगे।

जिनको तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो उनको यहां से प्रकाशित होने वाले श्रीनाथ पंचांग को मंगवा लेना चाहिये अथवा तत्तत्प्रान्तों की तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षिक हो तो तत्तत्प्रान्तों से प्रकाशित होने वाले दृश्य गणितानुसारी पंचांग को मंगवा लेना चाहिये।

अध्यक्ष

विद्या विभाग मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

नोट : पुष्टिमार्ग सम्बन्धी विशेष जानकारी वेबसाइट www.nathdwara.in/ www.shrinathjee.com के द्वारा भी आप प्राप्त कर सकते है।

वल्लभाब्द ५३३	**चैत्र शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	सोम	४	अप्रेल, सन् २०११ संवत्सरोत्सवः। इष्टिः।
२.	मंगल	५	
३.	बुध	६	गणगौरी।
४.	गुरू	७	
५.	शुक्र	८	
६.	शनि	९	श्री गुसांईजी के छट्ठेलालजी श्री यदुनाथजी को उत्सव। (१६१५)
७.	रवि	१०	
८.	सोम	११	
९.	मंगल	१२	रामनवमी व्रतम्।
१०.	बुध	१३	रामनवमी व्रत की पारणा।
११.	गुरू	१४	कामदा एकादशी व्रतम्। श्री वल्लभाचार्य चरण के उत्सव की बधाई। मेष संक्रान्ति। सतुआ राजभोग अथवा उत्थापन में ता पीछे दान श्रद्धादि करने अबके यह संक्रान्ति ११ गुरू कूं दोपहर १ बजकर १ मिनिट पर बैठे है। तासूं पुण्यकाल आज प्रातः ९ बजकर १ मिनिट से लेकर ४ बजे के १ मिनिट तक मान्यो जायेगो तामे भी संक्रान्ति के पास के २ घन्टा अति मुख्य पुण्यकाल है।
१२.	शुक्र	१५	
१३.	शनि	१६	
१४.	रवि	१७	
१५.	सोम	१८	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३३-५३४	**वैशाख (गु.चैत्र) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
२.	मंगल	१६	
३.	बुध	२०	
४.	गुरू	२१	
५.	शुक्र	२२	
६.	शनि	२३	
७.	रवि	२४	श्री विट्ठलनाथजी को पाटोत्सवः।
८.	सोम	२५	
९.	मंगल	२६	
१०.	बुध	२७	पाँच स्वरूप को उत्सव नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ गोवर्द्धनलालजी महाराज कृत।
११.	गुरू	२८	वरूथिनी एकादशी व्रतम् श्री वल्लभाचार्यजी (श्री महाप्रभुजी) को उत्सव। (१५३५) श्री वल्लभाब्द ५३४ को प्रारम्भ।
१२.	शुक्र	२९	
१३.	शनि	३०	
१३.	रवि	१	मई
१४.	सोम	२	
३०.	मंगल	३	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३४	वैशाख शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	बुध	४	
२.	गुरू	५	
३.	शुक्र	६	अक्षय तृतीया चन्दन यात्रा त्रेतायुगादि जलकुम्भ दानम्।
४.	शनि	७	
५.	रवि	८	
६.	सोम	९	
७.	मंगल	१०	तिलकायित श्री लालगिरधारीजी महाराज को उत्सव (१६९०)
८.	बुध	११	
९.	गुरू	१२	
१०.	शुक्र	१३	
१२.	शनि	१४	मोहिनी एकादशी व्रतम् ।
१३.	रवि	१५	
१४.	सोम	१६	श्री नृसिंह जयन्ती व्रतम् ।
१५.	मंगल	१७	

वल्लभाब्द ५३४	ज्येष्ठ (गु. वैशाख) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	बुध	१८	इष्टिः।
२.	गुरू	१९	चार स्वरूप को उत्सव ति श्री दाऊजी महाराज कृत।
३.	शुक्र	२०	
४.	शनि	२१	
५.	रवि	२२	
६.	सोम	२३	
७.	मंगल	२४	
८.	बुध	२५	आज सूं ले के ज्येष्ठ शुक्ल ७ बुध पर्यन्त सूर्य कूं रोहिणी नक्षत्र है ता सूं इन दिनन में श्री के अंग में चन्दन धरावनो प्रशस्त है।
९.	गुरू	२६	
१०.	शुक्र	२७	
११.	शनि	२८	अपरा एकादशी व्रतम्।
१२.	रवि	२९	
१३.	सोम	३०	
१४.	मंगल	३१	
१५.	बुध	१	जून,

वल्लभाब्द ५३४	ज्येष्ठ शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	गुरू	२	इष्टिः।
२.	शुक्र	३	
३.	शनि	४	
४.	रवि	५	
५.	सोम	६	श्री के नाव को मनोरथ।
६.	मंगल	७	
७.	बुध	८	
८.	गुरू	९	
९.	शुक्र	१०	
१०.	शनि	११	श्री गंगादशमी दशहरा श्री यमुनाजी को उत्सव माने हे।
११.	रवि	१२	निर्जला एकादशी व्रतम्।
१२.	सोम	१३	
१३.	मंगल	१४	तिलकायित श्री गिरधारीजी महाराज को उत्सव (१९००) स्नान को जल भरनो सांझ कूं जल को अधिवासन करनो।
१५.	बुध	१५	ज्येष्ठाभिषेक (स्नान यात्रा)। खग्रास चन्द्रग्रहण ताको निर्णय पृ.सं. (२६-२७) पर लिख्यो है।

वल्लभाब्द ५३४	आषाढ़ (गु. ज्येष्ठ) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	गुरू	१६	इष्टिः।
२.	शुक्र	१७	
३.	शनि	१८	
४.	रवि	१९	
५.	सोम	२०	
६.	मंगल	२१	
७.	बुध	२२	
८.	गुरू	२३	
८.	शुक्र	२४	
९.	शनि	२५	
१०.	रवि	२६	
११.	सोम	२७	योगिनी एकादशी व्रतम्।
१२.	मंगल	२८	
१३.	बुध	२९	
१४.	गुरू	३०	
१६.	शुक्र	१	जुलाई, तिलकायित बड़े श्री गिरिधारीजी महाराज को उत्सव (१८२५)।

वल्लभाब्द ५३४	आषाढ़ शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	शनि	२	इष्टिः।
२.	रवि	३	रथयात्रा।
३.	सोम	४	
४.	मंगल	५	श्री द्वारकाधीशजी को पाटोत्सव। चतुर्थी को क्षय होय वे सूं आज।
६.	बुध	६	कसूंभा छट्ठ। षष्ठी पण्डगू। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज गादी विराजे सो उत्सव तथा तिलकायित श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराजश्री गादी विराजे।(२०५७)
७.	गुरू	७	
८.	शुक्र	८	
९.	शनि	९	
१०.	रवि	१०	
११.	सोम	११	देवशयनी एकादशी व्रतम्। चातुर्मास्यनियमारम्भः ।
१२.	मंगल	१२	
१३.	बुध	१३	
१४.	गुरू	१४	
१५.	शुक्र	१५	पर्वात्मक उत्सव चातुर्मास्यनियमारम्भः एकादशी कूं न भयो होय तो द्वादशी अथवा पूर्णिमा के दिन करनो तामे पूर्णिमा मुख्य। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३४	श्रावण (गु. आषाढ़) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	शनि	१६	हिन्दोलारम्भः।
२.	रवि	१७	
३.	सोम	१८	
४.	मंगल	१९	श्री चन्द्रमाजी को पाटोत्सवः।
५.	बुध	२०	
६.	गुरू	२१	
७.	शुक्र	२२	
८.	शनि	२३	जन्माष्टमी की बधाई
९.	रवि	२४	
१०.	सोम	२५	तिलकायित श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज को उत्सव हांडी उत्सव। (१७६३)
११.	मंगल	२६	कामिका एकादशी व्रतम्।
१२.	बुध	२७	
१३.	गुरू	२८	
१४.	शुक्र	२९	
३०.	शनि	३०	हरियाली अमावस।

वल्लभाब्द ५३४	श्रावण शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	रवि	३१	इष्टिः।
२.	सोम	१	अगस्त
३.	मंगल	२	ठकुरानी तीज मधुस्रवा।
४.	बुध	३	
५.	गुरू	४	नाग पंचमी।
६.	शुक्र	५	
८.	शनि	६	
९.	रवि	७	सात स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत।
१०.	सोम	८	
११.	मंगल	९	पुत्रदा एकादशी व्रतम् पवित्रारोपणं प्रातः श्रृंगार में याही दिन सात स्वरूप कूं पवित्रा धरायवे को विशेष उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत।
१२.	बुध	१०	गुरुन कूं पवित्रा धरावने।
१३.	गुरू	११	
१४.	शुक्र	१२	श्री विट्ठलेशरायजी महाराज को उत्सव। (१६५७)
१५.	शनि	१३	रक्षा बन्धनं सायं उत्थापन में गुसांईजी के ज्येष्ठ पुत्र श्रीगिरधरजी के लालजी श्री दामोदरजी महाराज को उत्सव(१६३२) आपस्तम्ब हिरण्यकेशीय बौधायन काण्व माध्यन्दिन प्रभृति ऋग्वेदीन, सर्व यजुर्वेदीन तथा अथर्ववेदीनं की श्रावणी।

वल्लभाब्द ५३४	भाद्रपद (गु. श्रावण) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	रवि	१४	इष्टिः। गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज को उत्सव। हेमहिन्दोला (१९१७)
२.	सोम	१५	हिन्दोला विजय।
३.	मंगल	१६	कज्जली तीज।
४.	बुध	१७	
४.	गुरू	१८	
५.	शुक्र	१९	
६.	शनि	२०	
७.	रवि	२१	शयन में षष्ठी को उत्सव। विष्णु स्वामि, प्राकट्योत्सव।
८.	सोम	२२	जन्माष्टमी व्रतम्।
९.	मंगल	२३	नन्दमहोत्सव।
१०.	बुध	२४	
११.	गुरू	२५	अजा एकादशी व्रतम्।
१२.	शुक्र	२६	
१३.	शनि	२७	
१४.	रवि	२८	काका वल्लभजी को उत्सव। (१७०३)
३०.	सोम	२९	कुश गृहणी अमावस। सोमवती अमावस। राधाष्टमी की बधाई। इष्टिः ।

वल्लभाब्द ५३४	भाद्रपद शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
२.	मंगल	३०	
३.	बुध	३१	सामवेदीन की श्रावणी।
४.	गुरू	१	सितम्बर, गणेश चतुर्थी।
५.	शुक्र	२	ऋषि पंचमी। द्वितीय स्वरूपोत्सव।
६.	शनि	३	तिलकायित श्री विट्ठलेशजी महाराज को उत्सव।(१७४४)
७.	रवि	४	
८.	सोम	५	राधाष्टमी ।
९.	मंगल	६	
१०.	बुध	७	
११.	गुरू	८	परिवर्तिनी एकादशी व्रतम् (दान एकादशी) नवलक्ष ग्रन्थकर्त्ता श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को उत्सव। (१७१४) वामन द्वादशी।
१२.	शुक्र	९	
१३.	शनि	१०	
१४.	रवि	११	
१५.	सोम	१२	सांझी को आरम्भः।

वल्लभाब्द ५३४	आश्विन (गु. भाद्रपद) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	मंगल	१३	इष्टिः।श्राद्धपक्ष को आरम्भः। ताको निर्णय पृष्ठ सं. (२८-२९) पर लिख्यो है।
२.	बुध	१४	
३.	गुरू	१५	
४.	शुक्र	१६	
५.	शनि	१७	श्री हरिरायजी को उत्सव। (१६४७)
६.	रवि	१८	
७.	सोम	१९	
७.	मंगल	२०	
८.	बुध	२१	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरूषोत्तमजी को उत्सव। (१५८७)
९.	गुरू	२२	
१०.	शुक्र	२३	
१२.	शनि	२४	इन्दिरा एकादशी व्रतम् (महादान)। श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी को उत्सव। (१५६७)
१३.	रवि	२५	श्री गुसांईजी के तीसरे लालजी श्रीबालकृष्णजी को उत्सव। (१६०६)
१४.	सोम	२६	
३०.	मंगल	२७	सर्व पितृ अमावस कोटकी आरती सांझी की समाप्ति।

वल्लभाब्द ५३४	आश्विन शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	बुध	२८	इष्टिः। मातामह श्राद्ध। नवरात्रारम्भः।
२.	गुरू	२९	
४.	शुक्र	३०	श्री दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (दुहेरा मनोरथ) (१८५४)
५.	शनि	१	अक्टूबर,
६.	रवि	२	
७.	सोम	३	सरस्वती पूजनारम्भः।
८.	मंगल	४	
९.	बुध	५	
१०.	गुरू	६	दशहरा (विजया दशमी) सरस्वती विसर्जनम् श्री गुसांईजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गिरधरजी के प्रथम लालजी श्री मुरलीधरजी को उत्सव।
११.	शुक्र	७	पाशांकुशा एकादशी व्रतम्।
१२.	शनि	८	
१३.	रवि	९	श्री बालकृष्णजी को पाटोत्सवः।
१४.	सोम	१०	
१५.	मंगल	११	शरद पूर्णिमा (रासोत्सवः)।
१५.	बुध	१२	कार्तिक स्नानारम्भः । इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३४	कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	गुरू	१३	
२.	शुक्र	१४	
३.	शनि	१५	
४.	रवि	१६	
५.	सोम	१७	
६.	मंगल	१८	
७.	बुध	१९	
८.	गुरू	२०	
९.	शुक्र	२१	
१०.	शनि	२२	
११.	रवि	२३	रमा एकादशी व्रतम्।
१२.	सोम	२४	
१३.	मंगल	२५	धनतेरस। रूप चतुर्दशी (अभ्यंग) अमावस्या बुधवार के सूर्योदय से पूर्व चतुर्दशी में।
३०.	बुध	२६	दीपोत्सव (दीपावली) हटड़ी (गोकर्ण जागरणम्) कान जगाई।

वल्लभाब्द ५३४	कार्तिक शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	गुरू	२७	इष्टिः। अन्नकूटोत्सवः। गोवर्द्धनपूजा। गुर्जराणां २०६८ वर्षारम्भः।
२.	शुक्र	२८	यम द्वितीया।
३.	शनि	२९	
४.	रवि	३०	
५.	सोम	३१	
६.	मंगल	१	नवम्बर
७.	बुध	२	श्री नवनीत प्रभु को व्रज में पधरायवे को विशेष उत्सव गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत। (२०६३)
८.	गुरू	३	गोपाष्टमी।
९.	शुक्र	४	अक्षय नवमी। कृत युगादि कूष्माण्डदानम्।
१०.	शनि	५	
११.	रवि	६	प्रबोधिनी एकादशी व्रतम् देवोत्थापनं सायं सन्ध्या में।
१२.	सोम	७	श्री गुसांईजी के प्रथम लालजी श्री गिरधरजी को उत्सव (१५९७) तथा पंचमलालजी श्री रघुनाथजी को उत्सव। (१६११)
१३.	मंगल	८	
१४.	बुध	९	ति.श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१८७६)
१५.	गुरू	१०	चार स्वरूप को उत्सव। नित्यलीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत। चातुर्मास्य तथा कार्तिक के नियम की समाप्ति। गोपमासारम्भः।

वल्लभाब्द ५३४	मार्गशीर्ष (गु. कार्तिक) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	शुक्र	११	इष्टिः।(व्रतचर्या) अथवा गोपमासारम्भः।
२.	शनि	१२	
३.	रवि	१३	
३.	सोम	१४	
४.	मंगल	१५	छः स्वरूप को उत्सव तिलकायित श्री दाऊजी महाराज कृत।
५.	बुध	१६	
६.	गुरू	१७	
७.	शुक्र	१८	गो.ति. १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज को उत्सव (१६८४)
८.	शनि	१९	श्री गुसांईजी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दरायजी को उत्सव। (१५९९)
१०	रवि	२०	
११.	सोम	२१	उत्पत्ति एकादशी व्रतम्।
१२.	मंगल	२२	श्री नवनीत प्रभु कूं व्रज सूं नाथद्वारा निज मन्दिर में पधरायवे को उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत (२०६३)
१३.	बुध	२३	श्री गुसांईजी के सातवे लालजी श्री घनश्यामजी को उत्सव (१६२८)
१४.	गुरू	२४	
३०.	शुक्र	२५	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३४	मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	शनि	२६	
३.	रवि	२७	
४.	सोम	२८	
५.	मंगल	२९	श्री मदनमोहनजी को पाटोत्सवः।
६.	बुध	३०	
७.	गुरू	१	दिसम्बर, श्री गुसांईजी के चतुर्थलालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव (१६०८)
८.	शुक्र	२	सात स्वरूप को उत्सव श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज कृत।
९.	शनि	३	श्री गुसांईजी के उत्सव की बधाई।
१०.	रवि	४	
१०.	सोम	५	
११.	मंगल	६	मोक्षदा एकादशी व्रतम्।
१२.	बुध	७	
१३.	गुरू	८	
१४.	शुक्र	९	छप्पन भोग बलदेवजी को उत्सव कितनेक माने है।
१५.	शनि	१०	गोपामास समाप्ति। खग्रास चन्द्रग्रहण ताको निर्णय पृ. सं. (३०-३१) पर लिख्यो है।

वल्लभाब्द ५३४	**पौष (गु. मार्गशीर्ष) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	रवि	११	इष्टिः। नित्यलीलास्थ गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री दाऊजी (श्री राजीवजी) महाराज को उत्सव। (२००५)
२.	सोम	१२	
३.	मंगल	१३	
४.	बुध	१४	
५.	गुरू	१५	
६.	शुक्र	१६	धनुर्मासारम्भः।
७.	शनि	१७	श्री गुसांईजी के ज्येष्ठ पौत्र श्री गोविन्दजी के पुत्र श्री कल्याणरायजी को उत्सव। (१६२५)
८.	रवि	१८	
९.	सोम	१९	श्री मत्प्रभुचरण श्री विट्टलनाथजी को उत्सव। (१५७२)
१०.	मंगल	२०	
११.	बुध	२१	सफला एकादशी व्रतम्। फल अवश्य भोग धरनो, फलन के दान अवश्य करनो। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव। (१७६९)
१२.	गुरू	२२	
१४.	शुक्र	२३	
३०.	शनि	२४	गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) महाराज के पुत्र **चि.गो.श्री भूपेश कुमारजी (श्री विशाल बावा)** को जन्मदिन। (२०३७)

वल्लभाब्द ५३४	पौष शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	रवि	२५	इष्टिः।
२.	सोम	२६	
३.	मंगल	२७	
४.	बुध	२८	
५.	गुरू	२९	
६.	शुक्र	३०	नित्यलीलास्थ गो.श्री १०८ श्री दामोदरलालजी महाराज को उत्सव। (१९५३)
७.	शनि	३१	
८.	रवि	१	जनवरी सन् २०१२ को प्रारम्भ।
९.	सोम	२	
१०.	मंगल	३	
११.	बुध	४	
११.	गुरू	५	पुत्रदा एकादशी व्रतम्।
१२.	शुक्र	६	
१३.	शनि	७	
१४.	रवि	८	
१५.	सोम	९	माघ स्नानारम्भ।

वल्लभाब्द ५३४	माघ (गु. पौष) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	मंगल	१०	
२.	बुध	११	
३.	गुरू	१२	
४.	शुक्र	१३	
५.	शनि	१४	भोगी, धनुर्मास समाप्ति।
७.	रवि	१५	मकर संक्रान्ति। तिलवा गोपी वल्लभ में अथवा राजभोग में। ता पीछे दान श्राद्धादि करने। अब के यह संक्रान्ति ५ शनि कूं रात्रि के १२ बज के ५९ मिनिट पर बैठे है, तासूं पुण्यकाल आज सूर्योदय सूं लेके दिन के ३ बजके २३ मिनिट पर्यन्त है। तामे भी सूर्योदय के पास के २ घण्टा अति मुख्य पुण्यकाल है। उत्तरायण।
८.	सोम	१६	बड़े दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव। (१७११)
९.	मंगल	१७	
१०.	बुध	१८	
११.	गुरू	१९	षट्तिला एकादशी व्रतम्। तिलकी वस्तु अवश्य भोग धरनो तिल के दान भक्षणादि करने।
१२.	शुक्र	२०	
१३.	शनि	२१	
१४.	रवि	२२	
३०.	सोम	२३	सोमवती अमावस।

वल्लभाब्द ५३४	माघ शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	मंगल	२४	इष्टिः।
२.	बुध	२५	
३.	गुरू	२६	
४.	शुक्र	२७	श्री मुकुन्दरायजी को पाटोत्सव।
५.	शनि	२८	बसन्त पंचमी।
६.	रवि	२९	
७.	सोम	३०	
८.	मंगल	३१	
९.	बुध	१	फरवरी,
१०.	गुरू	२	
११.	शुक्र	३	जया एकादशी व्रतम्।
१२.	शनि	४	
१३.	रवि	५	
१४.	सोम	६	
१५.	मंगल	७	माघ स्नान समाप्तिः। होरीडांडो दण्डारोपणं आज सूर्यास्तानन्तरं सायं ६ बजके २२ मिनिट के पश्चात् यही समय धमार को आरम्भ। रोपणी को उत्सव।

वल्लभाब्द ५३४	फाल्गुन (गु. माघ) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	बुध	८	इष्टिः।
२.	गुरू	९	
३.	शुक्र	१०	
४.	शनि	११	
५.	रवि	१२	
६.	सोम	१३	
७.	मंगल	१४	श्रीनाथजी का पाटोत्सवः।
८.	बुध	१५	
९.	गुरू	१६	
११.	शुक्र	१७	
१२.	शनि	१८	विजया एकादशी व्रतम्।
१३.	रवि	१९	
१४.	सोम	२०	
३०.	मंगल	२१	

वल्लभाब्द ५३४	फाल्गुन शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	बुध	२२	इष्टिः।
२.	गुरू	२३	
३.	शुक्र	२४	
३.	शनि	२५	
४.	रवि	२६	
५.	सोम	२७	
६.	मंगल	२८	
७.	बुध	२९	श्री मथुरेशजी को पाटोत्सवः। गोस्वामि तिलकायित १०८ **श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी)** महाराज श्री को जन्मदिन।(२००६)
८.	गुरू	१	मार्च, होलिकाष्टकारम्भः।
९.	शुक्र	२	
१०.	शनि	३	
११.	रवि	४	आमलकी (कुंज) एकादशी व्रतम्।
१२.	सोम	५	
१३.	मंगल	६	
१४.	बुध	७	होली होलिका प्रदीपनं पूर्णिमा गुरू के सूर्योदय से पूर्व।
१५.	गुरू	८	धूलिवन्दन (धुरेण्डी)।

वल्लभाब्द ५३४	चैत्र (गु. फाल्गुन) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०६८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१.	शुक्र	९	दोलोत्सव (डोल)। इष्टिः।
२.	शनि	१०	द्वितीया पाट।
४.	रवि	११	
५.	सोम	१२	
६.	मंगल	१३	
७.	बुध	१४	
८.	गुरू	१५	
९.	शुक्र	१६	
१०.	शनि	१७	
११	रवि	१८	पाप मोचिनी एकादशी व्रतम्।
१२.	सोम	१९	
१३.	मंगल	२०	
१४.	बुध	२१	
३०.	गुरू	२२	वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात्।

खग्रास चन्द्र ग्रहण

सम्वत् २०६८ शक १९३३ ज्येष्ठ शुक्लपक्ष पूर्णिमा बुधवार दिनांक १५ जून सन् २०११ के दिन खग्रास चन्द्र ग्रहण होयगो। या दिन नाथद्वारा में दिनमान ३४ घड़ी ९ पल सूर्योदय स्टे. टा. ५ बज के ४६ मिनिट, सूर्यास्त ७ बजे के २६ मिनिट नाथद्वारा में नवीन गणित प्रमाणे १५ बुधवार को रात्रि के स्पर्श ११ बजके ५२ मिनिट, मध्य १ बज के ४३ मिनिट तथा मोक्ष ३ बज के ३३ मिनिट पे होयगो पर्वकाल ३ घंटा ४१ मिनिट को है। पूर्णिमा बुधवार के दिन की ११ बजे के ५२ मिनिट सूं ही वेध लगे है। तासूं दिनकी ११ बजके ५२ मिनट के पूर्व ही प्रसाद ले सकेंगे। सायं ७ बजके २६ मिनट के पूर्व ही जल पीयो जायगो। बिना जनेऊ के बालक, छोटी कन्या तथा वृद्ध एवं आतुर सायं ७ बजके २६ मिनट के पूर्व ही प्रसाद ले सकेंगे। पूर्णिमा बुधवार के दिन राजभोग १० बजके ३० मिनट तक हो जाय ऐसो सेवा क्रम राखनो। उत्थापन ऐसे समय करने की सायं ६ बजे तक शयन हो जाय। शयन की सखड़ी गायन कूं जाय। सेवा में सुपेदी सब कोरी राखनी। रसोई बालभोग आदि स्थल तथा पात्रन की शुद्धि ग्रहण में जैसी होती होय वैसी करनी। सर्वत्र दर्भ धरने। श्री कूं या सुमार पे जगावने ताकि स्पर्श सूं पूर्व मंगला आरती पर्यन्त की सेवा हो जाय। स्पर्श सू चारेक मिनट पूर्व दूधघर को भोग उठाय झारी बंटा हू पट्ट वस्त्र सूं उठावने। स्पर्श समय दर्शन खोलिके जपादि करने रात्रि के १ बजके ४३ मिनिट पर श्रीके आगे दान को संकल्प करनो खिचड़ी को डबरा धृत दक्षिणा सहित प्रायः सर्वत्र दियो जाय है। प्रत्यक्ष अथवा निष्क्रय द्वारा गोदान जहां जैसे हो तो होय तहां वैसो किये जाय। मनुष्य भी यथाशक्ति दानादि अवश्य करें मोक्ष भये पीछे चार पांच

मिनिट ठहर के स्नानादि करने शुद्ध होय नवीन जल सूं झारी भरनी श्रीकूं स्नान करवाय ग्रहण पीछे को भोग धरनों। नित्य प्रमाणे राजभोग पर्यन्त की सेवा पहुंचनी यथा शक्ति ब्राह्मण भोजन करवाय महाप्रसाद लेनो।

यह ग्रहण वृश्चिक व धनु राशि पर है। अतः इन दोनों राशि के फल क्रमशः नीचे दियें गये है।

यह ग्रहण- मिथुन, कन्या, मकर, कुम्भ राशि वारेन कूं शुभ
वृष, कर्क, तुला, मीन, राशि वारेन कूं मध्यम
मेष, सिंह, वृश्चिक, धनु वारेन कूं अनिष्ट।

यह ग्रहण- कर्क, तुला, कुम्भ, मीन राशि वारेन कूं शुभ
मेष, मिथुन, सिंह, वृश्चिक राशि वारेन कूं मध्यम
वृष, कन्या, धनु, मकर वारेन कूं अनिष्ट।

जिनको जन्म नक्षत्र ज्येष्ठा एवं मूल होय उनकूं अधिक अनिष्ट है। जिनकूं ग्रहण अनिष्ट होय उनकूं एक कांस्य के पात्र में तातो पतरो घृत भरिके सुवर्ण को नाग तथा चन्द्र बिम्ब धरिके वा ताते पतरे घृत में मुख देखिके दक्षिणा सहित दान करनो ताको मन्त्र :-

तमोमय महाभीम सोमसूर्यविमर्दन।
हेमतारप्रदानेन मम शान्तिप्रदो भव।। १ ।।

विधुन्तुद नमस्तुभ्यं सिंहिकानन्दनाऽच्युत।
दानेनानेन नागस्य रक्ष मां वेधजाद्भयात्।। २।।

	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
स्टे. घण्टा	११	१	३	३
मिनिट	५२	४३	३३	४१

श्राद्धपक्ष को निर्णय

आश्विन (गु. भाद्रपद) कृष्णपक्ष

आश्विन कृष्ण १ प्रतिपदा मंगलवार से लेकर ७ सोमवार तक सब श्राद्ध तिथि प्रमाणे करने। ७ मंगल कूं ८ को श्राद्ध ८ बुध कूं ९ को श्राद्ध, ९ गुरू कूं १० को श्राद्ध १० शुक्र कूं ११ को श्राद्ध १२ शनि से लेके आश्विन शुक्ल १ बुध तक सब श्राद्ध तिथि प्रमाणे करने। जाकी मरण तिथि पूर्णिमा होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या, व्यतीपात या में सूं कोई भी दिन करनो।

भाद्रपद की पूर्णिमा श्राद्धपक्ष में नहीं है ५ शनि के दिन भरणी नक्षत्र है तासूं पिण्ड रहित श्राद्ध करिवे सूं गया श्राद्ध जैसो फल लिख्यो है। ८ बुध कूं व्यतीपात भी है तासूं यह दिवस श्राद्धादिक में विशेष प्रशस्त है तासूं कोई भी तिथि को श्राद्ध रही गयो होय या रहि जायवे को संभव होयतो या दिवस करनो। या ही दिन ही मातृ नवमी के श्राद्ध माता प्रभृति सुवासिनी मृत भई होय तो एवाती सुवासिनी भी अवश्य जिमावनी। १२ शनि के दिन द्वादशी निमित्तक संन्यासीन को महालय श्राद्ध। १३ रवि कूं श्राद्ध समय मघा नक्षत्र भी है। तासूं मघा निमित्त श्राद्ध भी अवश्य करनो चाहिए। जो न बन सके तो सर्व पितृगण के नामोच्चारण पूर्वक एक संकल्प करके ब्राह्मण भोजन अवश्य ही करावनो। क्योंकि जो श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन कछु भी न करें ता कूं दोष लिख्यो है। १४ सोम कूं चतुर्दशी निमित्तक घायलन के श्राद्ध जल शस्त्र आदि सूं मरण पायो होय उनके ही या दिन श्राद्ध, जाकी मरण तिथि चतुर्दशी होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या, व्यतीपात या मे सूं कोई भी दिन में करनों। ३० मंगल कूं सर्वपितृ अमावस्या एवं आश्विन शुक्ल १ बुध के दिन मातामह श्राद्ध।

श्राद्धपक्ष को संकल्प

ऊँ विष्णुः ३ श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेंऽष्टाविंशति तम कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जंबूद्वीपे भारत वर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे क्रोधी नाम्नि अष्टषष्टिः अधिक द्विसहस्त्र संख्याके वैक्रमाब्दे शकानुसारेण खरनाम संवत्सरे शरदृतौ आश्विन मासे (गुर्जर भाद्रपद मासे) कृष्णपक्षे अमुक तिथौ वासरान्वितायां नक्षत्र योगे-करणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, सिंह राशि स्थिते श्रीसूर्ये पंचमी के श्राद्ध से कन्या राशि स्थिते सूर्ये मेष राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थानस्थितेषु सत्स्वेवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ मम (नाम सम्बन्धोच्चारणं) एतेषां यथानाम् गौत्र रूपाणां पुरुष विषये सपत्नीकानां स्त्री विषये सभर्तृक सापत्या विधिनामहालयापर पक्ष श्राद्धमथवा सकृन्महालया पर पक्ष श्राद्ध सदैवं सद्यः करिष्येः

इति श्राद्ध पक्ष निर्णय समाप्त।

खग्रास चन्द्र ग्रहण

सम्वत् २०६८ शक १९३३ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष पूर्णिमा शनिवार दिनांक १० दिसम्बर सन् २०११ के दिन खग्रास चन्द्र ग्रहण होयगो। या दिन नाथद्वारा में दिनमान २६ घड़ी २८ पल सूर्योदय स्टे. टा. ७ बज के ११ मिनिट, सूर्यास्त ५ बजे के ४६ मिनिट नाथद्वारा में नवीन गणित प्रमाणे १५ शनिवार को स्पर्श सायं ६ बजके १५ मिनिट, मध्य ८ बज के २ मिनिट तथा मोक्ष ९ बज के ४८ मिनिट पे होयगो पर्वकाल ३ घंटा ३३ मिनिट को है। १४ शुक्रवार की पिछली रात्रि के ३ बजे के ४९ मिनिट सूं ही वेध लगे है। तासूं शुक्रवार की रात्रि के ३ बजके ४९ मिनट के पूर्व ही प्रसाद ले सकेंगे। दिन के ३ बजके ८ मिनट के पूर्व ही जल पीयो जायगो। बिना जनेऊ के बालक, छोटी कन्या तथा वृद्ध एवं आतुर दिन के ३ बजके ८ मिनट के पूर्व ही प्रसाद ले सकेंगे। राजभोग की सखड़ी गायन कूं जाय। शनिवार के दिन बेग ही राजभोग पर्यन्त की सेवा पहूंचनी सांझकूं ग्रहण समयसूं दो घड़ी पूर्व भोग सरजाय ऐसे क्रमसूं श्रीकूं जगावनें सन्ध्या आरती पर्यन्त की सेवा पहूंचनी सेवा में सुपेदी सब कोरी राखनी। रसोई बालभोग आदि स्थल तथा पात्रन की शुद्धि ग्रहण में जैसी होती होय वैसी करनी। सर्वत्र दर्भ धरने। रीति प्रमाणे सूको मेवा प्रभृति धरनो बीड़ा हूं तबकडी में नवीन धरने। शय्या को साज बडो करनो शय्या उठावनी जहां प्रथम दर्भ न धरे होय तहां सर्वत्र धरने। मथनि निकारि के मन्दिर को जल घड़ा बासन शुद्ध और सूके करने। स्पर्श सू चारेक मिनट पूर्व दूधघर को भोग उठाय झारी बंटा हू पट्ट वस्त्र सूं उठावने। स्पर्श समय दर्शन खोलिके जपादि करने रात्रि को ८ बजके २ मिनिट पर श्रीके आगे दान को संकल्प करनो खिचड़ी को डबरा धृत दक्षिणा सहित प्रायः सर्वत्र दियो जाय है। प्रत्यक्ष अथवा निष्क्रय द्वारा गोदान जहां जैसे हो तो होय

तहां वैसो किये जाय। मनुष्य भी यथाशक्ति दानादि अवश्य करें मोक्ष भये पीछे चार पांच मिनिट ठहर के स्नानादि करने शुद्ध होय नवीन जल सूं झारी भरनी श्रीकूं स्नान करवायके ग्रहण पीछे को भोग तथा शयन भोग धरनों ता पीछे सब नित्य क्रमसूं सेवा पहुंचनी अनवसर कर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन पूर्वक प्रसाद लेनो।

यह ग्रहण- कर्क, सिंह, धनु, मीन राशि वारेन कूं शुभ
मेष, कन्या, वृश्चिक, मकर राशि वारेन कूं मध्यम
वृषभ, मिथुन, तुला, कुम्भ वारेन कूं अनिष्ट।

जिनको जन्म वृष राशि रोहिणी एवं मृगशिर नक्षत्र होय उनकूं अधिक अनिष्ट है। जिनकूं ग्रहण अनिष्ट होय उनकूं एक कांस्य के पात्र में तातो पतरो घृत भरिके सुवर्ण को नाग तथा चन्द्र बिम्ब धरिके वा ताते पतरे घृत में मुख देखिके दक्षिणा सहित दान करनो ताको मन्त्र :-

तमोमय महाभीम सोमसूर्यविमर्दन।
हेमतारप्रदानेन मम शान्तिप्रदो भव।। १ ।।
विधुन्तुद नमस्तुभ्यं सिंहिकानन्दनाऽच्युत।
दानेनानेन नागस्य रक्ष मां वेधजाद्भयात्।। २।।

	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
स्टे. घण्टा	६	८	६	३
मिनिट	१५	२	४८	३३

गणितकर्त्ता : **त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दन जी शास्त्री**
दूरभाष : (०२६५३) २३०४८५
मो. ६४१४४७३०१६

शरणागति

'अहो बकीयम्' की व्याख्या करते हुए श्रीमद्वल्लभाचार्य जी ने कहा है कि जो असीम आनन्द-रूप प्रभु है वह किसी को तुच्छ फल दे यह आश्चर्य है और सर्व साधन रहित दुष्ट हृदय वाले को सर्वोच्च फल देना तो और भी आश्यचर्यजनक है।

पूतना बकासुर की बहिन थी बक के व्यवहार को साधु पुरुष भी अपनाते है। जैसे बक एकाग्रचित होता है वैसे ही सत्पुरुष भी भगवान् में एकाग्रचित होते है अर्थात् उसकी वृत्ति से सन्त भी मुक्त नहीं रहते। ऐसे बक की बहिन पूतना ने अपने विष वाले स्तनों को भगवान् को पिलाया उसका यह अपराध अज्ञान्तः नहीं था किन्तु वह जानती थी कि यह भगवान् अविनाशी है तब भी उसने मारने की इच्छा से स्तनपान कराया। दूसरे रूप में यह भी तात्पर्य हो सकता है कि अपराधी के अभिप्राय पर भी दण्ड होता है जैसे कोई मनुष्य वृक्ष पर गोली लगाये और अकस्मात् किसी मनुष्य के लग जाये तो गोली मारने वाले का अपराध कम माना जाता है। किन्तु यहाँ तो यह बात भी नहीं थी उसने तो भगवान् को मारने की इच्छा से ही विष का स्तन पिलाया था। दैत्य जितेन्द्रिय होते है परन्तु पूतना जीवन पर्यन्त दुराचारिणी रही। अतः इससे यह भी नहीं कहा जा सकता कि पहले सदाचारिणी होने से उसे श्री यशोदा की गति दी। भगवान् ने तो माता का आकार एवं मुँह में स्तन देना रूप माता की क्रिया देख उसे धन्य श्रीयशोदाजी की गति दी थी। भगवान् के स्वरूप से काम क्रोधादि दोषों युक्त व्यक्ति का भी किसी रूप में सम्बन्ध हो जाय तो भी भगवान् उसे अपने प्रमेयबल से सर्वोच्च ही फल देते है।

विश्व में इससे बड़ा दयालु और कोई नहीं है। जिसने मारने वाली पूतना जो पूर्ण दण्ड के योग्य थी उसे भी श्री यशोदाजी की गति दे दी। ऐसे उन भगवान को छोड़कर अन्य किसका शरण ग्रहण करना चाहिये शरणागति की भावना रखने वाला सेवा आदि का भी फल प्राप्त कर लेता है ऐसा भी कहा है।

गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि मेरी शरण में आने वाले प्राणी मात्र परम पद को प्राप्त करते है अतएव श्रीमहाप्रभुजी ने श्री सुबोधनी में कहा है कि चाण्डाल भी शरण की भावना करता हुआ दीक्षा लेकर अथवा वैसे ही भगवन्नाम लेता रहे तो उसका दूसरा जन्म हो जाता है और जन्मजात सभी दोष मिट जाते है। इस समय के मानवों का उद्धार मर्यादा के साधनों से होना कठिन हो गया है उनसे तो अधिकारी विशेष का ही उद्धार हो सकता है जैसा कि कृष्णा-श्रय में कहा है।

इस समय कर्मज्ञान-विहित भक्ति, उत्तमस्थान, गंगा, मन्त्र, सत्पुरुष एवं अन्य देवताओं से उद्धार होना कठिन हो गया है। अतः इस समय एक मात्र श्रीकृष्ण की ही शरणागति उद्धार का उपाय है। शरणागत गोपीजनों के लिए तो भगवान ने यह भी कहा है कि सदा के लिए मैं तुम्हारा ऋणी रहूँगा। और आप (श्रीकृष्ण) ने ब्रह्मादि का स्वागत न कर शरणागत भक्तों का ही स्वागत अहो महाभागाः कहकर स्वागत किया और उन्हें महाभाग्यवान बताया। अतः इस समय के मानवों को अपने उद्धार के लिए भगवान श्रीकृष्ण की ही शरणागति की भावना करते रहना चाहिये।

लेखक
त्रिपाठी यदुनन्दन श्री नारायण जी शास्त्री
विद्या विभागाध्यक्ष
मन्दिर मंडल (नाथद्वारा)
दूरभाष : (०२९५३) २३०४८५

वर्त्तमान गोस्वामि बालकन के जन्म दिन की गुर्जरमासानुसार सूचना

श्री नाथद्वारा

फाल्गुन शु. ७
गोस्वामि तिलकायित श्री १०८
श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) महाराजश्री
श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) के लालजी १
मार्ग. कृ. ३० चि. गो. श्री भूपेशकुमारजी
(श्री विशाल बाबा)

आषा. कृ. १३ गो. कल्याणरायजी
गो. कल्याणरायजी के लालजी २

पौ.कृ. ६ चि. श्रीहरिरायजी

अश्विन शु. ६ चि. श्रीवागधीशजी

चि. हरिरायजी के लालजी १
माघ शु. १३ चि. श्री वदान्य राय जी (श्री गिरधर जी)

पौष शु. ५ गो. श्री गोकुलोत्सवजी
श्रीगोकुलोत्सवजी के लालजी १

फा.शु. ४ चि. श्री अभिनवाचार्यजी (श्रीव्रजोत्सवजी)

चि. अभिनवाचार्य जी के लालजी १

वै.शु. १२ चि. व्रजेश्वरजी (श्रीउमंगजी)

आ.शु. १४ गो. देवेन्द्रकुमारजी
श्रीदेवेन्द्रकुमारजी के लालजी १
वै.कृ. ४ चि. दिव्येशजी

कांकरोली

पौ.शु. १० गो. श्रीवृजेशकुमारजी

चै.कृ. ४ गो. पीताम्बरजी

वै.कृ. ६ गो. त्रिलोकीभूषणजी

श्रीव्रजेशकुमारजी के लालजी २
ज्ये.शु. ५ चि. पुरूषोत्तमजी

फा.कृ. ४ चि. द्वारकेशजी

श्रीपीताम्बरजी के लालजी १
ज्ये. शु १४ चि. व्रजालंकारजी

गो. त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १
वै.कृ. १३ गो. चि. व्रजाभरणजी

श्रीपुरूषोत्तमजी के लालजी २

का. कृ. ६ गो. श्रीव्रजभूषणजी

का. शु. १० गो. चि. श्रीविट्ठलनाथजी

आ. सु. ६ गो. रविकुमारजी
गो. रविकुमारजी के लालजी २

श्रा. ३० चि. अवतंस बावा
(मधुरम जी)

माघ व. ४ चि. प्रियम बावा

कोटा-बम्बई जतीपुरा

ज्ये. कृ ६ गो. लालमणीजी
लालमणीजी के लालजी २

चि. गो. श्रीप्रभुजी (मिलनकुमारजी)

चै. शु. ६ चि. द्वारकेशलालजी
श्री मिलनकुमारजी के लालजी १

श्रा.कृ.२ चि. रणछोड़ लालजी
(कृष्णास्थ बावा)

कोटा-कड़ी

चै.शु. १० गो. गोपाललालजी

गोविन्दरायजी के लालजी

मा.कृ. ६ चि. व्रजेशकुमारजी

माघ.व. १० गो. चि. घनश्यामलालजी

आसो. सु. १० गो. दामोदरलालजी

चै. व. १२ गो. चि. वल्लभलालजी
गो. वल्लभलालजी के लालजी १

आषा. सु. ८ चि. पुरूषोत्तमजी
घनश्यामलालजी के लालजी २

फा.शु. ७ गो.चि. कृष्णकुमारजी
गो.चि. कृष्णकुमारजी के लालजी १

पौ.व. ११ गो.चि. व्रजपाललालजी

फा.शु. ११ चि. कुंजेशकुमारजी
गो. चि. कुंजेशकुमारजी के लालजी २

मार्ग.व. २ गो.चि. गोविन्दरायजी

आश्वि.व. ३ गो.चि. गोकुलमणीजी

गो. गोपाललाजी के लालजी २
आसो. व. ३ चि. विनयकुमारजी

आषा. व. ४ चि. शरदकुमारजी

श्रा.सु. ७ गो. त्रिलोकीभूषणजी
त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १

ज्ये.कृ. १ राजीवलोचनजी

व्रजेशकुमारजी के लालजी ३

चै.शु. ६ चि यदुनाथजी
चि. यदुनाथजी के लालजी १
पौ.कृ. ५ चि. प्रद्युम्नजी

कार्ति. सु. १० चि. द्वारकेशजी

कार्ति सु. ७ चि. जयदेवजी
चि. जयदेवजी के लालजी १

मार्ग कृ. १३ चि. व्रजराजजी

चि. दामोदरलालजी के लालजी २
श्रा. व. १२ चि. हरिरायजी

ज्ये.व. १० चि दर्शन कुमारजी

कामवन

फा. सु. २ गो. श्री वल्लभलालजी
गो. श्री वल्लभलालजी के लालजी २

भा. कृ. २ चि. श्री देवकीनंदनजी

श्रा. कृ. १० चि. श्री विट्ठलनाथजी

कामवन/सूरत

आ. कृ. १४ गो. श्री द्वारकेशलालजी
गो.श्रीद्वारकेशलालजी के लालजी २

फा. शु. ३ चि. श्री अनिरुद्धलालजी

श्रा. कृ. १३ चि. श्री कन्हैयालालजी

च. श्री अनिरुद्धलालजी के लालजी २
भा. कृ. ४ चि. श्री गोविन्दजी

का. शु. ७ चि. श्री गोकुलचन्द्र जी

चि. श्री कन्हैयालालजी के लालजी १
का. शु. १० चि. श्री जयदेवजी

कामनवन/भावनगर

भा. शु. १ गो. श्री नवनीतलालजी

गो. श्री नवनीतलालजी के लालजी १
का. शु. १ चि. श्री गोकुलेशजी

कामवन/घाटकोपर

का. कृ. ११ गो. मुरलीधर जी
गो. मुरलीधरलालजी के लालजी १

मार्ग. शु. ४ चि. श्री जयदेवलालजी

चै. कृ. १३ गो. श्री रघुनाथलालजी
गो. श्री रघुनाथलालजी के लालजी २

मार्ग. शु. ६ चि. श्री गिरधरजी

श्रा. कृ. ५ चि. श्री दामोदर जी,

कामवन

माघ. सु. १३ गो. घनश्यामजी

चै. सु. १५ गो. रघुनाथलालजी (गोकुल-मुम्बई)
गो. घनश्यामजी के लालजी ३

आष.सु. ११ चि. ब्रजेशकुमारजी

श्रा. व. ३ चि. गोपाललालजी

आसो. व १२ चि. कल्याणरायजी

गो. रघुनाथजी के लालजी १

माघ. सु. ४ चि. योगेशकुमारजी
चि. योगेशकुमारजी के लालजी २

आ. व. १३ चि. श्रीव्रजोत्सवजी

श्रा. कृ. ३० चि. व्रजपालजी (मुदितजी)

भा.सु. १४ गो. शिशिरकुमारजी

गो. चि. गोपालजी के लालजी १
आसो. व. ४ चि. लालजी

गो.चि.कल्याणरायजी के लालजी २
श्रा. व. ३ गो. चि. अनिरूद्धजी

भा. व. १ गो. चि. उपेन्द्रजी

गोकुल

का. व. १० गो. देवकीनन्दनजी
गो. देवकीनन्दन के लालजी २

मा. व. ३० चि. वल्लभलालजी

का. सु. २ चि. विट्ठलनाथजी

वीरमगाम

आसो. व. १४ गो. जयदेवलालजी
गो. जयदेवलालजी के लालजी ३

ज्ये. सु. १ चि. मथुरेशजी
चि. मथुरेशजी के लालजी १
आसो. व. १४ चि. रघुनाथ जी

आसो. व. ६ चि. ब्रजेशकुमारजी
चि. ब्रजेशकुमार जी के लालजी १
माघ व. ६ चि. रसिकप्रितमजी

चि. कन्हैयालालजी के लालजी १
श्रा. व. ८ चि. श्रीगोकुलेशजी

सूरत

आषा. व. ४ गो. गोपेश्वरजी

गो. गोपेश्वरजी के लाल जी १

फाल्गु. व ६ चि. वत्सलराजजी

माघ. व ५ गो. कल्याणरायजी

मार्ग. सु. ११ गो. वल्लभलालजी

पौ. व. ३ गो. मुकुन्दरायजी

गो. वल्लभलालजी के लालजी १

आसो. व. १ चि. अनुरागजी

बड़ोदरा, सूरत

चै. सु. ११ गो. मथुरेशजी

भा.व. ४ गो. चन्द्रगोपालजी

पौ. व. ५ गो. प्रभुजी

गो. मथुरेशजी के लालजी २

भा.सु. ६ चि. योगेशकुमारजी

भा.व. २ चि. द्रुमिलकुमारजी

गो. द्रुमिलकुमारजी के लालजी १

चि. व्रजराजकुमारजी

चापासेनी-जामनगर-नडियाद

मा. व. ३ गो. विट्ठलनाथजी

ज्ये. सु. ५ गो. हरिरायजी

फा. व. १४ गो. व्रजरत्नजी

पौष सु. ६ गो. नवनीतरायजी

आष. सु. गो. बालकृष्णजी

गो. चि. विट्ठलेशरायजी के लालजी ३

आषा. सु. १५ चि. मुकुट बावा

फा. व. १२ चि. शरदकुमारजी

फा. सु. १५ चि. उत्सवजी

चि. हरिरायजी के लालजी १

का. व. १२ चि. व्रजवल्लभजी

गो. व्रजरत्नजी के लालजी १

अश्वि. सु. ७ चि. गोकुलोत्सवजी

गो. नवनीतलालजी के लालजी १

ज्ये. सु. १० चि. अंजनरायजी

बालकृष्णजी के लालजी १

पौ. सु. १ चि. प्रियांकजी

मथुरा

पौ. व. ६ गो. प्राणवल्लभजी

गो.प्राणवल्लभलालजी के लालजी २

का. शुक्ल ११ चि. व्रजवल्लभजी

चै. वदी ११ चि. जयवल्लभ जी

चि. व्रजवल्लभजी के लालजी १
वै. कृ. ११ चि. कृतार्थ बावा

माघ सुदी ५ गो. रसिकवल्लभजी
गो. रसिकवल्लभ जी के लालजी १

मृग शुक्ल ५ चि. समर्पण बावा

का. सु. ६ गो. अक्षयकुमारजी

आषा. सु. १४ गो. शरदकुमारजी
गो. शरदकुमारजी के लालजी ३

माघ. व ६ चि. गोपाललालजी

का.सु. ५ चि. व्रजभूषणलालजी

ज्ये. सु. ११ गो. प्रबोधकुमारजी
गो. प्रबोधकुमारजी के लालजी १

भा. सु. ४ चि. रत्नेशकुमारजी

चि. प्रबोधकुमारजी के लालजी १
भा. सु. ८ चि. अभिषेक बावा

मार्ग. व. २ गो. संदीपकुमारजी

पौ. सु. ६ गो. संजयकुमार जी

गो. अक्षयकुमारजी के लालजी ३

आसो. सु. १ चि. प्रणयकुमारजी

प्रणयकुमारजी के लालजी २

फा.शु. १२ गो.चि. श्रीअलंकारजी

फा.शु. ७ गो.चि. वृजरायजी

पौ. व. ६ चि. परितोषकुमारजी

मार्ग. व. ८ चि. पंकजकुमारजी

वाराणसी

मार्ग. सु. २ श्याम मनोहरजी

गो. श्याममनोहरजी के लालजी १

मार्ग. कृ. ६ गो. चि. प्रियेन्दु बावा

राजनगर-कडी-अहमदाबाद

का.सु. १२ चि. व्रजेन्द्रकुमारजी

गो. व्रजेन्द्रकुमारजी के लालजी २

आसो. व. १० चि. मधुसूदनलालजी
(तिलक बावा)

आश्वि. शु. १ गो.चि. रणछोड़लालजी
(आभरण बावा)

गो.चि. मधुसूदनलालजी

(तिलक बावा) के लालजी २

ज्ये.सु. २ गो. चि. व्रजरायजी (निवेदन बावा)

आ.व.१० गो.चि. व्रजेश्वरजी (आभुषणजी बावा)

मुम्बई

ज्ये. व. ६ गो. श्याममनोहरजी

आ. सु. ५ गो. मनमथराय जी

गो. गोपीनाथजी के लालजी २
का. व. १३ चि. रमेशचन्द्रजी
माघ. सु. ६ चि. अनिरूद्धलालजी (श्रीराजकुमारजी)

चि. रमेशचन्द्रजी के लालजी १
माघ. व. ६ गो. रघुनाथजी

गो. रघुनाथजी के लालजी २
भा. सु. ५ चि. गोपीनाथजी दिक्षीत जी (गो. राहुल जी)

मार्ग. सु. २ चि. नागरमोहनजी (चि. निवेद जी)

चि. अनिरूद्धजी के लालजी २
माघ. व. ६ चि. यदुनाथजी

फा. सु. १५ चि. गोकुलनाथजी

गो. माधवरायजी के लालजी १
मार्ग. व. ६ चि. नीरजकुमारजी

चि. नीरजकुमारजी के लालजी १
वै. व. १४ चि. गोविन्दरायजी

गो. कृष्णजीवनजी के लालजी ५
आसो. सु. ७ गो. हरिरायजी

पौ. व. ४ गो. मधूसुदन जी

फा. सु. १३ गो. मुरलीमनोहरजी

आषा. सु. २ गो. कृष्णकान्तजी

चि. कृष्णकान्त जी के लालजी १
श्रा. शु. ११ चि. गिरिधरलालजी

चै.सु. १४ गो. पुरूषोत्तमलालजी
गो. पुरूषोत्तमलालजी के लालजी २

मार्ग. सु. ४ चि. गोकुलनाथजी

आषा. सु. ११ चि. ललितत्रिभंगीजी

चि. ललितत्रिभंगीजी के लालजी १
फा. सु. ८ चि. व्रजवल्लभलालजी

गो. हरिरायजी के लालजी २
मार्ग व ४ चि. हृषीकेशजी

चि. हृषीकेशजी के लालजी २
आसो. सु. १ चि. राजीवलोचनजी

वै.सु. ७ रविरायजी

गो. द्वारकाधीशजी के लालजी २
वै. व. ४ चि. योगेशकुमारजी

चि. योगेशकुमारजी के लालजी १
भा. व. ३० चि. बालकृष्णलालजी
(मिथिलेशकुमारजी)

आसो. व. ४ चि. कमलेशकुमारजी
चि. कमलेशकुमारजी के लालजी १

फा. कृ. ६ चि. मुकुन्दरायजी

आसो. सु. १ गो. मनमोहनजी
मनमोहनजी के लालजी १

आ. व. १४ गो. चि. प्रियव्रतरायजी

आषा. ३० गो. हिरण्यगर्भजी
गो. हिरण्यगर्भजी के लाल जी १

आ. कृ. ११ चि. हैयंगवीनजी

गो. मधुदसूदनजी के लालजी २
चै.सु. १० चि. कृष्णचन्द्रजी

पौ. व. ५ चि. वल्लभदीक्षितजी

गो. मुरलीमनोहरजी के लालजी १

आसो. सु. ११ चि. गोपिकालंकारजी

कान्दीवली-मुम्बई

भा.सु. ८ गो. व्रजजीवनजी
गो. व्रजजीवन के लालजी २

ज्ये. सु. २ चि. द्वारकेशलालजी

कार्ति. सु. ७ चि. पुरूषोत्तमजी

मुम्बई विलेपार्ले

आसो. सु. ३ गो. रसिकवल्लभजी

चैत्र सुदि ६ गो. महेन्द्रकुमारजी

गो. रसिकवल्लभजी के लालजी १

आसो. सु. १३ चि. शिशिरकुमारजी
चि. शिशिरकुमारजी के लालजी १

पौ. कृ. ५ चि. मुरलीमनोहरजी

मुम्बई-वेरावल-पोरबन्दर

माघ. सु. ८ गो. माधवरायजी

मार्ग. सु. ६ गो. चन्द्रगोपालजी
गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १

श्रा. कृ. ६ चि. अनिरूद्धलालजी

आसो. व. १४ गो. शैलेशकुमारजी
श्रीशैलेशकुमारजी के लालजी १

श्रा. सु. ३ चि. लाडिलेशजी

गो. माधवरायजी के लालजी १
आषा. व. ४ चि. मुरलीधरजी

बोरीवली-जामखंभालिया

पौ. सु. १३ गो. वल्लभलालजी

श्रा. व. १३ गो. राकेशकुमारजी

गो. मुरलीधरजी के लालजी ३
का. व. १३ गो. त्रिभंगीलालजी

चै. व. ११ गो. व्रजप्रियजी

चे. व. १४ गो. यशोदानन्दन जी

गो. वल्लभलालजी के लालजी ३
वै. सु. १३ चि. राजीवलोचनजी

मार्ग. सु. २ चि. गोविन्दरायजी
चि. गोविन्दरायजी के लालजी १
श्रा. सु. २ चि. मधुसूदन जी
(चि. रूचिरबाबा)

ज्ये. सु. १५ चि. गोपिकालंकारजी
चि. गोपिकालंकारजी के लालजी १

फा. सु. २ चि. गो. द्वारकेशलालजी

गो. राजीवलोचनजी के लालजी ३

आषा. व. ५ चि. देवकीनन्दनजी
(भागवतकुमारजी)

चि. देवकीनन्दनजी के लालजी १

चै.व. ११ चि. गो. श्री दीक्षितजी
(चि. वेदांग बावा)

ज्ये. सु. ४ चि. कुंजरायजी
(योगीन्द्रकुमारजी)

श्रा. कृ. ३ चि. गो. गिरिधरजी

गो. त्रिभंगीलालजी के लालजी १
का. सु. ३ चि. यमुनेशकुमारजी

जूनागढ

श्रा. व. ३ गो. दानीरायजी
गो. दानीरायजी के लालजी ४

श्रा. सु. १२ चि. गोकुलेशजी

का. सु. ५ चि. पुरूषोत्तमजी

आषा. सु. ११ चि. व्रजेन्द्रकुमारजी

चि. व्रजेन्द्रकुमारजी लालजी २

भा.व. १ चि. ब्रजनाथजी
(चि. शशांक बावा)

आश्वि. व. १३ चि. मधुरेशजी
(चि. मृदुल बावा)

का. शु. १५ चि. विशालकुमारजी

पूना-मद्रास

चै. सु. ४ गो. अजयकुमारजी

गो. अजयकुमारजी के लालजी १

भा. कृ. ६ चि. वागधीशकुमारजी

फा. व. ११ गो. भरतकुमारजी

गो. भरतकुमारजी के लालजी १

वै. व. २ चि. यशोवर्द्धन जी

मांडवी, गोकुल, जूनागढ़, बम्बई, राजकोट, बड़ोदरा

वै. सु. १४ गो. रणछोड़लालजी (राजकोट)

गो. रणछोड़लालजी के लालजी १

फा. कृ. १३ चि. गोकुलनाथजी

माघ. व. ६ गो. अनिरूद्धलालजी

गो. अनिरूद्धजी के लालजी १

वै. सु. १४ चि. रसिकरायजी (शरदजी)

चि. रसिकरायजी के लालजी १

श्रा. कृ. ७ चि. अचिन्त्य जी

आषा. सु. ८ गो. चिमनलालजी (गोकुल)

गो. चिमनलालजी के लालजी २

आ. कृ. ६ चि. चन्द्रगोपालजी (पंकज बावा)

का. सु. ४ चि. भूषणजी

चि. चन्द्रगोपालजी के लालजी २

का. सु. १२ चि. अन्वयजी

श्रा. सु. ५ चि. प्रत्यय जी

चि. भूषणजी के लालजी २

फा. कृ. ३ चि. अव्ययजी

का. सु. ८ चि. गोपालजी

वै. सु. ६ गो. किशोर चन्द्रजी (जूनागढ)
गो. किशोरचन्द्रजी के लालजी १

का. व. ४ चि. व्रजेन्द्रजी (पीयूष बावा)
चि. व्रजेन्द्रजी के लालजी २

का. कृ. २ चि. ब्रजवल्लभजी

पौ. कृ. ७ चि. पुण्यश्लोकजी

पौ. सु. १२ गो. विट्ठलनाथजी (मुम्बई)

आश्विन कृ. ७ गो. श्री सांरगजी (बडोदरा)
गो. श्री सारंगजी के लालजी १

फा.सु. १४ चि. घनश्यामलालजी (उत्सव बावा)

पोरबन्दर

वै. सु. ७ गो. हरिरायजी
हरिरायजी के लालजी १

मा. शु. ११ चि. जयगोपालजी

मथुरा-पोरबन्दर

मार्ग. व. १० गो. रसिकरायजी

आ. सु. १२ गो. मथुरेशकुमारजी

आसो. व १० गो. कन्हैयालालजी

पौ.सु.६ गो.जयदेवलालजी

गो. रसिकरायजी के लालजी २
वै. व. १० चि. चन्द्रगोपालजी

वै. व. ७ चि. शरदकुमारजी

गो. मथुरेशकुमारजी के लालजी २
माघ. व. १२ चि. वसन्तकुमारजी

का. सु. ६ चि. विशालकुमारजी

गो. कन्हैयालालजी के लालजी २
फा. कृ. ५ चि. अभिषेककुमारजी

वै. शु. ३ चि. अक्षयकुमारजी

गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
आषा. सु. ७ चि. मिलनकुमारजी

चि. मिलनकुमारजी के लालजी १
मार्ग शु. ८ चि. गोकुलनाथजी

लीलास्थ गोस्वामि बालकन के उत्सव की सूचना

वै. सु. ३ श्रीदेवकीनन्दनजी कामवन

वै. व. ११ श्रीदेवकीनन्दनजी इन्दौर

वै. व. १२ श्रीदीक्षितजी बम्बई

वै. व. १४ श्रीविट्ठलेशरायजी पोर.

ज्ये. सु. ६ श्रीगिरधरजी कोटा

जये. सु. १२ श्रीद्वारकेशलालजी कोटा

ज्ये. सु. १५ श्रीजीवनलालजी काशी

ज्ये. व. ८ श्रीघनश्यामलालजी मांडवी

ज्ये. व. १४ श्रीवागधीशजी अमरेली

आ. सु. ३ श्रीवल्लभलालजी कामवन

भा. सु. ७ श्रीव्रजरत्नलालजी सूरत

फा. शु. १५ श्रीमाधवरायजी पोर.

का. व. ७ श्रीगोविन्दलालजी नाथद्वारा

आ. व. ८ श्रीघनश्यामलालजी कामवन

आ. व. १२ श्रीविट्ठलेशरायजी बम्बई

वै. व. १ श्रीद्वारकेशजी पोरबन्दर

आ. व. १ श्रीगोकुलेशरायजी जूनागढ़

आ. व. ८ श्रीयदुनाथजी सूरत

आ. व. १० श्रीव्रजरत्नलालजी नडियाद

आ. व. १३ श्रीबालकृष्णजी कांकरोली

आ. व. १३ श्रीकृष्णरायजी इन्दौर

आ. व. १३ श्रीगोकुलेशजी बम्बई

आ. सु. ३ श्रीदामोदरलालजी चापां

भा. वं. १ श्रीगोवर्द्धनलालजी नाथद्वारा

माघ व. २ श्रीव्रजभूषणलालजी कांक

फा. व. ५ श्रीचिम्मनलाल जी बम्बई

मा. व. ३० श्रीगोविन्दरायजी पोर.

मा. कृ. १ श्रीदाऊजी (राजीवजी) नाथद्वारा

श्रा. व. १४ श्रीगोपाललालजी कांकरोली

भा. व. ८ श्रीमुरलीधरजी बेटद्वार

श्रा. व. ८ श्रीकन्हैयालालजी गोकुल

भा. व. १० श्रीव्रजनाथजी विलेपार्ले

का. सु. १४ श्रीजीवनलालजी कोटा

भा. व. ७ श्रीवल्लभलालजी बड़ौदा

भा. व. ८ श्रीमुरलीधरजी कोटा

भ. व. ११ श्रीनृसिंहलाल जी शेरगढ़

आ. सु. १३ श्रीरघुनाथजी जूनागढ़

आ. व. ३ श्रीघनश्यामलालजी बम्बई

आ. व. ५ श्रीव्रजनाथजी जामनगर

आ. व. ६ श्रीमगनलालजी सूरत

आ. व. १३ श्रीव्रजपाललालजी मथुरा

का. व. २ श्रीपुरूषोत्तमलालजी जूना

का. सु. ६ श्रीपुरूषोत्तमलालजी अमरे	फा. व. १३ श्रीव्रजरायजी अहमदाबाद
का. सु. ७ श्रीलालमणिजी कोटा	श्रा. व. ६ श्रीकृष्णजीवनजी
का. सु. ८ श्रीगोपाललालजी मथुरा	माघ. व. २ श्री नटवरलालजी
फा. सु. ८ श्रीरमणजी कामवन	का. सु. १ श्रीरमणलालजी मथुरा
आ. सु. ३ श्रीगोपालालजी कांकरोली	श्रा. सु. १२ श्रीविट्ठलेशरायजी चापा
का. व. १४ श्रीजयदेवजी वीरमगाम	श्रा. सु. ३० श्रीकन्हैयालालजी बम्बई
मार्ग सु. १३ श्रीगिरधरलालजी नाथ	भा. सु. १२ श्रीगोकुलनाथजी बम्बई
ज्ये. सु. ५ श्रीजीवनजी बम्बई	भा. सु. १२ श्रीअनिरूद्धलालजी नडियाद
ज्ये. सु. ११ श्रीकल्याणरायजी मथुरा	भा. व. ३ श्रीगोवर्द्धनलालजी बम्बई
ज्ये. सु. १३ श्रीजीवनलालजी पोर	भा. व. ३ श्रीदामोदरलालजी मथुरा
ज्ये. सु. १४ श्रीद्वारकेशलालजी बम्बई	भा. व. ७ श्रीघनश्यामलालजी सूरत
श्रा. व. ७ श्रीरणछोड़लालजी बम्बई	वै. कृ. ५ श्रीरणछोड़लालजी कोटा
पौ. सु. ५ श्रीगोपेश्वरलालजी नाथद्वारा	वै. व. १२ श्रीब्रजरमणलालजी मथुरा
पौ. सु. ६ श्रीदामोदरलालजी नाथद्वारा	भा. कृ. १२ श्रीगोविन्दरायजी कोटा
पौ. सु. ७ श्रीरणछोड़लालजी कोटा	का. सु. १३ श्रीगोविन्दरायजी कामवन
पौ. व. ११ श्रीरणछोड़लालार्जी राज	पौ. व. १२ श्रीव्रजभूषणलालजी नड़ि
पौ. व. ६ श्रीवल्लभलालजी बम्बई	आसो व. १० श्री व्रजरायजी (नटवरगोपालजी) अहमदाबाद
का. सु. ४ श्रीमधुसूदनलालजी अमरे	श्रा. सु. ११ श्रीगिरधारीलालजी मु.
का. सु. १० श्रीगोकुलाधीशजी बम्बई	चै. सु. १५ श्रीमुरलीधरलालजी बोरी.
का. सु. १५ श्रीगिरधरलालजी काशी	वै. सु. ११ श्रीयदुनाथरायजी जती.
श्रा. व. १२ श्रीप्रद्युम्नलालजी वेटद्वार	वै. व. ३० श्रीवागीशरणजी बम्बई
फा. सु. ३ श्रीगिरधरजी सूरत	आषा. सु. २ श्रीगोपाललालजी कामवन
फा. सु. ११ श्रीगोविन्दरायजी सूरत	

आषा. सु. २ श्रीमगनलालजी वेरावल

श्रा. सु. २ श्रीवल्लभलालजी बम्बई

श्रा. व. ३० श्रीकन्हैयालालजी बम्बई

भा. सु. ४ श्रीपुरूषोत्तमलालजी चापा

का. सु. १ श्रीगोवर्द्धनेशजी बम्बई

का. सु. ३ श्रीप्रदीपकुमारजी मथुरा

का. सु. ११ श्रीश्यामसुन्दरजी बम्बई

भा. सु. १० श्रीदामोदरलालजी बम्बई

भा. सु. ११ श्रीव्रजवल्लभजी जूना

भा. सु. १३ श्रीपुरूषोत्तमलालजी को.

पौ. सु. ४ श्रीगोकुलनाथजी वेरावल

फा. सु. १२ श्रीकाकागिरधरजी नाथ.

भा. सु. ६ श्रीपुरूषोत्तमलालजी चापा

पौ. सु. १० श्रीकल्याणरायजी बम्बई

चै. सु. १३ श्रीमुरलीधरजी काशी

ज्ये. सु. ४ श्रीत्रिविक्रमरायजी कोटा

आषा. सु. ३ श्रीमथुरेशजी मुम्बई

वै. सु. १५ श्रीमाधवरायजी मुम्बई

भा. व. १ श्रीमदनमोहनजी मुम्बई

आषा. व. ३ श्रीनटवरगोपालजी (मु.-वेरावल - पोरबन्दर)

ज्ये. व. ४ श्रीगिरधरलालजी कामवन

फा. सु. १४ श्रीमधुसुदनलालजी सूरत

आष.व. ११ श्रीबालकृष्णलालजी सूरत

पौ.व. ६ श्रीविट्ठलनाथजी मथूरा

फा. व. ३० श्रीकृष्णचन्द्रजी मुम्बई

का. सु. ७ श्रीजीवनेशजी मुम्बई

वै. व. १४ श्रीव्रजाधीशजी मुम्बई

आ. सु. ५ श्रीविट्ठलेशरायजी कां. मुम्बई

का. व. ८ श्रीराजेन्द्रकुमारजी मथुरा

आषा. व. ११ श्रीविट्ठलेशरायजी इन्दौर

आसौ. सु. ११ श्रीकृष्णकुमारजी कामवन

माघ सु. ४ श्रीकृष्णकुमारजी मथुरा

माघ वदी ४ श्रीनृत्यगोपालजी मुम्बई

मार्ग. सु. १४ श्रीद्वारकेशलालजी मांडवी

माघ. कृ. २ श्रीनटवरलालजी मांडवी

वै. सु. १० श्रीमुरलीमनोहरजी बडोदरा

आ. सु. ५ श्रीदामोदरलालजी राजकोट

ज्ये. सु. ८ श्रीमुकुन्दरायजी राजकोट

वै. सु. ६ श्रीयदुनाथजी मथुरा

का.व. १० उत्तमश्लोकजी मुम्बई

फा.सु. ४ गोकुलनाथजी गोकुल

आषाढ़ व. ८ रसिकरायजी चापासेनी -जामनगर-नडियाद

पुष्टिमार्गीय विचार

१. भगवत भक्त के एक क्षण के संग के समान स्वर्ग और मोक्ष भी नहीं है, क्योंकि स्वर्ग में रहने वाले देवता में स्पर्धा, असूया आदि दोष होते हैं अतः उन्हें सुख दुःख दोनों होते है। और सुषुप्ति की तरह माने गये मर्यादामार्गीय मोक्ष में लीन होना रूप फल होने से परमानन्द की प्राप्ति नहीं होती। सत्संग में तो परमानन्द की ही प्राप्ति होती है। इसलिए सत्संग इससे बढ़कर है।

२. भगवान का सामान्य अनुग्रह हो तो लौकिक फल मिलता है और विशेष अनुग्रह हो जाय तो लौकिक अलौकिक सभी फल मिलते हैं और भगवान उसके वश में हो जाते हैं।

३. भगवदीय के आश्रय से तथा निरन्तर भगवन्नाम लेने से हीनातिहीन भी शुद्ध हो जाते हैं।

४. मानव को आनन्द भगवान से ही मिलता है किन्तु वह भ्रमवश स्त्री पुत्र आदि में आनन्द समझता है उसका यह भ्रम उसी प्रकार का है जैसे प्यास की शान्ति के लिये गगांजल को छोड़कर मृगतृष्णा की ओर दौड़ना।

५. पापी को भगवान में एवं भागवत कथा में विश्वास नहीं होता।

६. दुःख आवे तो यह समझना चाहिए कि मुझसे कोई दोष बन गया है। उसका यह फल है प्रभु का इसमें कोई दोष नहीं है।

७. कालरूप सर्प भक्तिरूप अमृत पीने वाले का कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

लेखक

राजेश्वर यदुनन्दनजी शास्त्री

गणित कर्त्ता